1.1.1 असत्यमेव जयते
ब्राह्मणवाद : सदैव असत्य की प्रतिष्ठा

ब्राह्मणवादी सदा सें नारा लगाते आए हैं **"सत्यमेव जयते सत्यं जयति नानतृं"** अर्थात सच्चाई की सदा जीत होती है, सत्य ही जीतता है झूठ नहीं जीतता! सम्राट अशोक के चार शेरों वाली मूर्ति जो कि आजकल भारत देश का राष्ट्रीय चिन्ह है, उसके नीचे भी "सत्यमेव जयते" लिखा गया है. दावा तथा प्रचार किया जाता है कि यह नारा मण्डूक उपनिषद सें लिया गया है. अतः ब्राह्मणवादी यह दावा करते हैं कि उनका धर्म सत्य की जीत होने की बातें करता है. लेकिन यह नारा ब्राह्मण धर्म पर **हमेशा** झूठा साबित हुआ है क्योंकि **ब्राह्मण धर्म में सत्य की कभी जीत हुई ही नहीं.** ऐसा कभी नहीं हुआ कि ब्राह्मणवाद में कभी सत्य की भी जीत हुई हो. ब्राह्मण धर्म का पूरा इतिहास इस बात का गवाह है कि उन्होंने हमेशा सच्चाई, इमानदारी और नैतिकता की हत्या करके "सत्यमेव जयते" का नारा लगाया है. उदाहरणतः

☞ अपनी बेटी सें बलात्कार तथा अपनी पोतियों सें कुकर्म करने वाला ब्रह्मा उनका सृष्टिकर्ता है सबसें बड़ा भगवान! सती साध्वी नारियों सें बलात्कार करने वाले को सृष्टि पालक बताया जाता है. अपने लिंग को पुजवाने वाला, दिन के चौबीसों घंटे वासना में लिप्त रहने वाला कामदेव को नष्ट करने वाला बताया जाता है! फिर भी सत्यमेव जयते!

☞ मातृतुल्य (माँ के बराबर) नारियों सें व्यभिचार करने वाला, भाई के हाथों भाई को मरवाने वाला, सगी बहन को शादीशुदा पुरूष के हाथों अगवा करवाने वाला, सगी मामी सें नित्य मैथुन करने वाला कृष्ण, "धर्म की रक्षा" के लिये अवतरित "भगवान" बताया जाता है. फिर भी सत्यमेव जयते!

☞ अपनी पूरे दिनों की गर्भवती पत्नि को धोखे सें घर सें निकालने वाला, लोगों को धोखे सें छिप कर मारने वाला, लोगों की बहन बेटियों के नाक कान काटने वाला, पूजा करते सन्तों की हत्या करने वाला, तन और मन सें नपुंसक आज "मर्यादा पुरुषोत्तम" कहा जाता है. फिर भी सत्यमेव जयते!

☞ जिन लोगों ने यज्ञ की आग में बैल, घोड़े, बकरे और गायें भून भून कर खाईं, सरेआम शराब पीकर सबके सामने पराई औरतों के साथ व्यभिचार किया, वेश्याएं देखते ही जिनके वीर्य सख्लित हुए वे ऋषि मुनि यानि साधु–सन्त कहे जाते है. फिर भी सत्यमेव जयते!

☞ वेद, पुराण, स्मृति, उपनिषद, महाभारत, रामायण, गीता में एक घटना तो क्या एक लाइन भी नहीं है जो सच्चाई पर, नैतिकता पर चलने की शिक्षा देती हो. नाईट क्लबों सें भी अधिक अश्लीलता सें भरे पड़े है इनके ग्रन्थ. तब भी इन्हें धार्मिक बताया जाता है! फिर भी सत्यमेव जयते!

☞ कसाई भी शर्मिंदा हो जाए ऐसी वीभत्स, खौफनाक बलियों सें भरे पड़े हैं उनके यज्ञ. दो हजार गायें रोजाना यज्ञ में काट कर ब्राह्मणों को खिलाने वाला रन्तिदेव को ये ब्राह्मण महादानी बताते हैं. बीस बैल एक बार के यज्ञ में भून कर खा जाने वाले इन्द्र को देवताओं का राजा बताया जाता है. अपनी शादी में सैंकड़ों गायें कटवाने वाला कृष्ण गोपाल कहा जाता है. ऐसे लोगों को गो–रक्षक बताया जाता है. फिर भी सत्यमेव जयते!

☞ विवेकानन्द जैसे ब्राह्मणवादी जब पश्चिमी जगत को ''लेडीज एण्ड जैंटलमॅन'' की जगह 'भाईओ और बहनों" कह कर सम्बोधन करते हैं तो बरबस मनोज कुमार का वह गाना याद आ जाता है ''कपड़ा है देसी और मुहर लगी जापान की, जय बोलो बेइमान की" विवेकानन्द को पक्का पता था कि ब्राह्मणों के किसी भी ऋषि, किसी भी भगवान, किसी भी नायक ने कभी किसी पराई औरत को बहन, बेटी या माँ का दर्जा नहीं दिया. ब्रह्मा सें लेकर गांधी तक सभी ब्राह्मणवादियों ने नारी का शारीरिक, मानसिक व नैतिक शोषण किया है. अगर नारी को इज्जत दी तो गौतम बुद्ध और महावीर स्वामी ने दी या उन्हीं की श्रमण संस्कृति के मशालची सन्तों कबीर रैदास नानक ने दी. फिर भी विवेकानन्द की यह घृष्टता ही थी कि उसने बुद्ध महावीर की शिक्षाओं को ब्राह्मणिक बता कर लोगों के सामने परोसा! ब्राह्मणों का कोई देव पराई तो क्या अपनी बहन को भी बहन कहने वाला नहीं हुआ. लेकिन विवेकानन्द जैसे लोग ऐसे देवों पर गर्व करने की बात कहते है. फिर भी सत्यमेव जयते!

☞ सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने अपनी पुस्तक "धर्म और समाज" में लिखा कि हिन्दू वह है जो चारों वेदों को धर्म का मूल माने, चारों आश्रमों तथा चारों प्रयोजनों को अपनाए. अपनी अन्य पुस्तक "भारतीय दर्शन" में उसने लिखा कि भगवन बुद्ध हिन्दू जन्मे थे, हिन्दू जीए तथा हिन्दू ही मृत्यु को प्राप्त हुए. वह बिल्कुल अच्छी तरह

जानता था कि भगवन बुद्ध ने हमेशा वेदों की निन्दा की है. उनके चारों आश्रमों और चारों प्रयोजनों का खण्डन किया है. उन्हें किसी भी आधार पर हिन्दू नहीं कहा जा सकता. लेकिन राधाकृष्णन ने लोगों को गुमराह करने के लिए धूर्ततापूर्ण झूठ बोला. ऐसे झूठे और धूर्त आदमी के जन्मदिन पर "अध्यापक दिवस" मनाया जाता है. फिर भी सत्यमेव जयते!

☞ बुद्ध महावीर के होने सें पहले सनातनी ब्राह्मण जानते ही नहीं थे कि सुसंस्कृत होना किसे कहते हैं. माँ, बहन और पत्नि में कौन भोग्या है कौन नहीं, वेद पुराण महाभारत के नायक जानते ही नहीं थे. ऋशि विश्वामित्र और उसके बाप में पत्नियों की अदला बदली हो गई और उनके कई कई बच्चे भी हो गए तब उन्हें अपनी गलती का पता लगा और तब वे फिर सें अपनी अपनी असली पत्नियों के पास गए!! कृश्ण का बेटा सांब अपने बाप की रखैल को ही ले उड़ा था. दयानन्द का आर्य समाज आज भी कहता है वेद काल में लौट चलो. जहां हर स्त्री को मादा पशु की तरह ग्यारह पुत्र पैदा करने अनिवार्य हैं. अगर उसका पति मर जाए तो भी उसे ग्यारह अन्य मर्दों सें नियोग (व्यभिचार) करवा कर ग्यारह पुत्र तो पैदा करने ही होंगे. कोई भी आर्य समाजी अपनी विधवा बहन बेटी सें दयानन्दी "धर्म" कुकर्म करवाने की हिम्मत नहीं कर पाता परन्तु दयानन्द के गुणगान जरूर करेगा. फिर भी सत्यमेव जयते!

☞ आर्य अपनी बेटियों को दांव पर लगा देते थे. शर्त जीतो और लड़की ले जाओ. सीता को उसके बाप ने दांव पर लगाया : कोई भी धनुष उठाओ सीता को ले जाओ. जिस समय सीता को दांव पर लगाया गया वह मात्र छः बरस की थी. उस बेचारी बालिका को तो पता भी नहीं था कि कोई उसे जीत कर ले जा रहा है. द्रोपदी के साथ भी ऐसा ही हुआ. ऐसी घटनाओं को स्वयंवर अर्थात वधु द्वारा मन मर्जी का वर स्वयं चुनना कहा जाता है! फिर भी सत्यमेव जयते!

☞ आर्य पांडव इतने पक्के और नीच जुआरी थे कि धन सम्पति तो हारे ही, अपनी पत्नि तक को जूए में हार गये. फिर वे जूए में हारी सम्पति के लिए अपने भाईयों सें लड़ मरे. जूए की सम्पति के लिए की गई मार काट को **धर्म–युद्ध** का नाम दिया जाता है. फिर भी सत्यमेव जयते!

☞ ब्राह्मणों का कोई देव कोई देवी बिना हथियारों के नहीं है. उनमें कोई ऐसा नहीं जिसने कत्ल न किये हों. लेकिन दावा किया जाता है कि ब्राह्मणवाद "धर्म" है! अहिंसा प्रिय धर्म!!. फिर भी सत्यमेव जयते!

☞ महाभारत में महावीर एकलव्य को सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर बताया गया है. लेकिन अर्जुन को सबसें बड़ा धनुर्धर साबित करने के लिए ब्राह्मण द्रोण ने महावीर एकलव्य का दाहिना अंगूठा काट लिया. इस तरह सर्वश्रेष्ठ "शिष्य" को अपंग करने वाले द्रोण के नाम पर आजकल सर्वश्रेष्ठ अध्यापक का पुरस्कार दिया जाता है और जो "खिलाड़ी" इस तरह सें धोखा करके प्रथम आया उसके नाम पर सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी का पुरस्कार दिया जाता है. फिर भी सत्यमेव जयते!

☞ ब्राह्मण धर्मी नारा देते हैं "वसुधैव कुटुम्बम" अर्थात सारी दुनिया एक ही परिवार है. जबकि सच्चाई यह है कि बाह्मणवादियों ने पूरे समाज को हजारों जातियों उपजातियों में बांट रखा है. एक का छूआ दूसरा नहीं खाता. भंगी राह चलता हुआ चकरा कर गिर जाये कोई द्विज उसे देखने तक नहीं आयेगा, उसे उठा कर हस्पताल ले जाने की तो कल्पना भी नहीं की जा सकती और दावा दिया जाता है वसुधैव कुटुम्बम. ब्रह्मो समाज का संस्थापक ब्राह्मण मोहन राय अपनी बीवी के हाथ का बना खाना नहीं खाता था. वह मानता था स्त्री तो अछूत होती है उसके हाथ का छूआ नहीं खाया जा सकता. राम अपने ही भाई की गद्दी हथियाने कर साजिश करता है. ब्राह्मण ऋषि अजीगर्त अपने बेटे को न केवल पैसे के लिये बेच देता है बल्कि पैसों की खातिर उसे यज्ञ में काटने को भी तैयार हो जाता है. ब्राह्मणों के ग्रन्थ ऋग्वेद सें गीता तक ऐसी घटनाओं सें भरे पड़े हैं जहां उनके ईष्ट देवों ने उन लागों की हत्या की जो उनकी जाति, धर्म, अथवा सिद्धांतों को नहीं मानते थे.! उनकी गर्भवती स्त्रियों के पेट फाड़ डाले ताकि उनका बीजनाश ही हो जाए. चाहे वे सारी दुनिया को एक परिवार होने की बात कहें लेकिन उनके हीरो वह लोग हैं जो धन के लिए भाई सें लड़ मरे. धन के लिए दादा नाना मामा गुरू चाचा ताया सभी मार गिराये. आर्य संस्कृति वाले राम ने अनार्य रक्ष संस्कृति वाले लोगों को मार गिराया. कृष्ण ने नाग जाति के मनुष्यों सें भरा पूरा जंगल जला का खाक कर दिया. पुराण रामायण महाभारत सभी आपसी लड़ाइयों की दास्तानों से भरे पड़े है. और तो और ब्राह्मणों का कोई देवता कोई माता बिना हथियारों के नहीं हैं. जब सारा विश्व ही अपना है तो हथियार किस लिए? गीता में धन के लिये लड़ने मरने का अपदेश दिया गया है. और नारा दिया जाता है "वसुधैव कुटुम्बम"! फिर भी सत्यमेव जयते!

- ☞ अगर ब्राह्मण ग्रन्थों को सत्य मान लिया जाये तो ब्राह्मणों ने लाखों करोड़ों जीव यज्ञ वेदी पर काट कर यज्ञ अग्नि में भून कर खा लिये. फिर भी वे दावा करते हैं कि उनका धर्म अहिंसावादी हैं. **वे कहते हैं यज्ञ में पशु मार कर खाना तो अहिंसा ही है क्योंकि जब पशु को यज्ञवेदी पर काटा जाता है खड़ग सें प्रार्थना की जाती है, "हे खड़ग, इस पशु को मत मारना." अर्थात इसे बगैर मारे ही काट देना.** लाखों करोड़ों गाय घोड़े बकरे काटकर खा लेने के बाद भी अहिंसामयी हैं ब्राह्मण. फिर भी सत्यमेव जयते!
- ☞ "सत्य" की खोज में तर्क और बुद्धि सर्वाधिक महत्वपूर्ण हैं. और उधर ब्राह्मणों के संविधान मनु स्मृति (2.11) का आदेश है कि जो व्यक्ति तर्क अथवा बुद्धि के आधार पर वेदों स्मृतियों का खंडन/अपमान करे वह सज्जनों द्वारा बहिष्कृत करने योग्य है. बुद्धि और तर्क यानि सत्य सें काम लेने वाले लोगों को या तो मार दिया जाता था या फिर जाति सें बाहर करके व्रात्या बना दिया जाता था. फिर भी सत्यमेव जयते!
- ☞ जब सरदार भगत सिंह सरीखे नौजवान अंग्रेजों को भारत सें खदेड़ने के लिए अपना खून बहा रहे थे, गांधी गांव गांव घूम कर भारतीय नौजवानों को अंग्रेजी सेना में भर्ती करवा रहा था. आज उस अंग्रेजों के तलवे चाटने वाले ब्राह्मणवादी को "राष्ट्रपिता" कहा जाता है, दलितों की पीठ में हमेशा छुरा घोंपने वाला गांधी दलितों का सबसें बड़ा हितरक्षक बताया जाता है. फिर भी सत्यमेव जयते!
- ☞ अगर ब्राह्मण ग्रन्थों को सत्य मानें तो आज गाय को माता कहने वाले ब्राह्मणों के पूर्वज करोड़ों गायों को मार कर खा गये. (गोमाँस 73) कहावत है नौ सौ चूहे खाकर बिल्ली हज को चली. ब्राह्मणों ने तो करोड़ों गायें खाकर डकार भी नहीं ली. ऐसे करोडों गाय खाने वाले आज गाय पूजक बने फिरते हैं. देवी भागवत, महाभारत, विष्णु पुराण जैसे ग्रन्थ आज भी गोहत्या और गोमाँस खाने को धार्मिक कार्य बताते हैं. फिर भी सत्यमेव जयते!
- ☞ राम चैत्र मास (मार्च अप्रैल) में अयोध्या सें बनवास गया था तथा चौदह साल बाद चैत्र मास (मार्च अप्रैल) को ही वापिस आया था. कार्तिक मास (अक्तूबर नवंबर) की दीपावली सें उसका कहीं कोई सम्बंध नहीं है लेकिन पूरा ब्राह्मण वर्ग इसे राम के साथ जोड़े हुए है. पढ़े लिखे विद्वान ब्राह्मण भी इस महाझूठ, महासाजिश में शामिल हैं. पूरे समाज को महाझूठ में गुमराह करके भी नारा दिया जाता है सत्यमेव जयते!!
- ☞ जब 1911 में अंग्रेज सम्राट जार्ज पंजम भारत आया तो टैगोर ने उसकी स्तुति में गीत लिखा "जन, गण, मन अधिनायक जय हे! भारत भाग्य विधाता . . . . जय हे!" यह गीत लिखने के एवज में टैगोर को सिपेसलारी मिली तथा नोबल पुरस्कार दिया गया. सारे भारत में जहां जहां सम्राट गया गांधी भक्तों ने उसके चरणों में बैठ कर यह स्तुति गान गाया. आज अंग्रेज सम्राट की शान में गाया गया वही स्तुति गीत हमारा राष्ट्रगान है! गांधी और उनके वंशज आज तक सम्राट की स्तुति गा कर तथा पूरे भारत सें गवा कर देशभक्त कहलवाते हैं! फिर भी सत्यमेव जयते!
- ☞ **समस्त ब्राह्मण ग्रन्थ जहां जहां आर्य रहते थे उस स्थान को आर्यवर्त कहते थे या ब्रह्मावर्त कहते थे. इस आर्यवर्त या ब्रह्मावर्त के बाहर के क्षेत्र को वे "भारत" कहते थे. अब वे दावा करते हैं कि हमारे भारत देश का नाम एक वेश्या (मेनका) की बदचलन बेटी शकुन्तला की नाजायज सन्तान के नाम पर रखा गया है. इस तरह वे समस्त भारतीयों को ही नहीं पूरे भारतवर्ष को बदचलन/हरामी होने की गाली देते हैं. साथ में नारा लगाते हैं सत्यमेव जयते सत्यं जयति नानतृं!!**
- ☞ अगर हिन्दू संस्कृति में सें बौद्ध, सिख, जैन धर्म के सिद्धांतों को अलग कर दें तो जो शेष रहेगा वह होगा ब्राह्मणों का सनातन धर्म : धर्म के नाम पर बदनुमा दाग. आदमी को आदमी न समझने वाला. बलात्कारियों व्यभिचारियों को भगवान बताने वाला मजहब. एक गली सड़ी परम्पराओं का गन्दा नाला!! बदबूदार अनैतिकता के कीड़ों सें भरा छप्पड़! फिर भी सत्यमेव जयते का नारा लगा कर फलने फूलने वाला मजहब!!
- ☞ सत्य की परिभाषा देते हुए ब्राह्मणधर्म ग्रन्थ कहते हैं कि ब्राह्मण के शब्द झूठ नहीं होते (विष्णु स्मृति 19.20. 22). इसका अर्थ यह हुआ कि सत्य वह है जो ब्राह्मण कहे. इसलिए वह "सत्य" होगा जो ब्राह्मण के मुख सें निकलेगा और उसके कहे की ही जय होगी. यही सत्य है.

ब्राह्मण धर्म में जब सत्यमेव जयते का नारा लगाया जाता है तो अग्रेजी की एक कहानी याद ताजा हो जाती है जिसमें कुछ लोगों द्वारा एक राजा का कत्ल कर दिया जाता है और कातिल ही नारा लगाते हैं, "राजा चिरायु हो". ऐसा ही कुछ ब्राह्मणधर्मी करते हैं. **वे सत्य का कत्ल करके नारा लगाते हैं सत्यमेव जयते!!**